प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 27 * JUN 2009 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	JUN - 1	*49*				अ०रामायण-राम का नि०नि० स्वरूप निरूपण पुरुष-प्रकृति-सृष्टिक्रम, भ० देश काल वस्तु से अतीत व सर्वरूप हैं	1
2	JUN - 2	*51*				अ०रामायण-राम का नि०नि० स्वरूप निरूपण पुरुष बिम्ब व माया में प्रतिबिम्ब - ईश्वर-जीव	2
3	JUN - 3	50				अ०रामायण-राम का नि०नि० स्वरूप निरूपण राम यानि आत्मा ही सर्वाधिक प्रिय है सीता का स्वरूप निरूपण	3
4	JUN - 4	*47*				अ०रामायण-द्रष्टा राम व दृश्य माया सीता का स्वरूप निरूपण आत्मा परमात्मा अनात्मा भेद	4
5	JUN - 5	53				अ०रामायण-द्रष्टा राम व दृश्य माया सीता का स्वरूप निरूपण राम अकर्ता,सर्वकर्म प्रकृति में सहस्त्रमुख रावण	5
6	JUN - 6	30				चार पुरुषार्थ-धर्म अर्थ काम मोक्ष धर्मकर्म से हुए स्वच्छ मन में ही भगवान के दर्शन होते हैं	
7	JUN - 7	45				भग०का नाम-ओंकार-का स्वरूप निरूपण हमारा स्वरूप जा०स्व०सु० से पृथक द्रष्टा तुरीय है	
8	JUN - 8	29				श्रेय-नित्य एवं प्रेय-आभास सुख निरूपण भक्ति ही भगवान के ज्ञान का साधन है	
9	JUN - 9	*44*				ब्रह्मोपनिषद-पुरुष प्रकृति व सृष्टिक्रम माया निद्रा का विकार स्व०जा० जगत है, मैं द्रष्टा हूं	1
10	JUN - 10	*52*				सृष्टि-लयक्रम, अध्यारोप-अपवाद, उपलक्षण निरूपण ब्रह्मोपनि० तैत्रीय छांदो० मुण्डक उप०	2
11	JUN - 11	51				त्रिकांडमय वेद-कर्म उपासना ज्ञान सकाम कर्म से संसार व नि० कर्म से भगवान मिलते हैं	
12	JUN - 12	48				त्रि०वेद, मल-विक्षेप-आवरण रूपी अज्ञान का नाशक है राम दृष्टा एवं दृश्य जगत सीता है	
13	JUN - 13	51				नि० कर्म से भगवान मिलते हैं-विशेष एवं सामान्य कर्म अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य आदि	
14	JUN - 14	48				त्रि०वेद,भक्ति की महिमा,ध्रुव की कथा नवधा भक्ति-भागवत/रामायण से, संत महिमा वर्णन	
15	JUN -15	*46*				त्रि०वेद - 'कर्म उपासना ज्ञान' क्रमशः 'मल-विक्षेप-आवरण' रूपी अज्ञान का नाशक है ब्रह्मोपनिषद-सृष्टि क्रम	Imp
16	JUN - 16	44				दो ब्रह्म हैं शब्द ब्रह्म : वेद, परम ब्रह्म नवधा भक्ति राम नाम की महिमा - परम कल्याण	
17	JUN - 17	35				भागवत में प्रभु के स०नि०-स०सा०-नि०नि० का स्वरूप निरूपण माया से सृष्टि	भा०१
18	JUN - 18	*38*				पुरुष में छाया रुप जगत, ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या ईश्वर एवं जीव सृष्टि Good	
19	JUN - 19	*34*				भागवत - १/१/१ का उपदेश क्रम, भागवत व ब्रह्म सूत्र के प्रथम मंत्र एवं गायत्रीमंत्र में एकता व अर्थ	भा०२
20	JUN - 20	47				वेदान्त वेदों का एवं मनुष्य शरीर सभी योनियों का सिरोभाग हैं ब्रह्म का स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण	
21	JUN - 21	*37*				रामायण का सार-सीताराम जगत के मातापिता सीता-दृश्य राम-द्रष्टा साक्षी, सीताराम का स्व०निरू०, **३ देह रचना**	
22	JUN - 22	51				५ भ्रांतियों- जीव-ईश्वर, कर्तृत्व-भोक्तृत्व, संग, विकारित्व, जगत कारण ब्र०से भिन्न व सत्य है	
23	JUN - 23	32				भगवान राम का उपदेश देव दुर्लभ नर शरीर का वेद मार्ग द्वारा मोक्ष प्राप्ति में उपयोग	
24	JUN - 24	45				छा०उ०-छटा अ० - उद्दालक का श्वेतकेतु को उपदेश एक ब्रह्म के ज्ञान से सर्व का ज्ञान - तत्त्वमसि	
25	JUN - 25	29				सीताराम जगत के मातापिता, सीता दृश्य-राम द्रष्टा रामलीला का प्रयोजन - सत्यमेव जयते	a
26	JUN - 26	*43*				ज्ञान-अज्ञान बन्ध-मोक्ष चिदाभास को होता है चिदाभास की सात अवस्थाऐं V.V.Good	Imp
27	JUN - 27	35				सीताराम जगत के मातापिता, सीता दृश्य-राम द्रष्टा सहस्त्रमुख रावण की कथा- राम अकर्ता हैं	b
28	JUN - 28	*53*				इदं अंश रज्जु आधार का ज्ञान पर विशेष अंश अधिष्ठान रज्जु का अज्ञान ही भ्रांति है V.Good	Imp
29	JUN - 29	*29*				रामरहस्योपनिषद-सीताराम का हमसे सम्बन्ध-राम पिता हैं-अंश अंशी निर्भेद हैं-रामोहम्-र अ म	Imp
30	JUN - 30	*46*				सरस्वती रहस्योपनिषद **अस्ति भाति प्रिय - ब्रह्म स्वरूप, नाम रूप -** जगत का स्वरूप	Imp
31	JUN - 31	30				माता ही पिता का, नाम ही नामी का ज्ञान कराता है जड़ नाम वेद माता सीता हैं नामी नि०नि० सच्चि० राम हैं	
						जैसे ओंकार ब्रह्म का ज्ञान कराता है पाँच माताओं का वर्णन ।	